हिंदी जन गण मन की भाषा

- डॉ. गोरख प्रभाकर काकडे

सार संक्षेप :

हिंदी केवल हमारे भारत की राजभाषा ही नहीं तो वह संपर्क भाषा भी है। वह पूरे भारत को, भारतीय संस्कृति को एक संघ बांधने का, एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। वह 11 राज्यों/द्वीप की राजभाषा और संपर्क भाषा भी है। वही वह महाराष्ट्र एवं पूर्व भारत की भी द्वितीय भाषा, संपर्क भाषा है। उसकी जड़े केवल संपर्क भाषा के हद तक ही सीमित नहीं हैं, तो वह वाणिज्य-व्यावसायिक भाषा भी है। वह हमारे अतीत गौरव को, हमारी राष्ट्रीय धरोहर का भारत भर एवं विश्व भर में पहुंचाने का भी काम करती है। वह केवल एक भाषा नहीं तो वह जन गण के मन की भाषा है।

बीज शब्द : अधिनायक भाषा, संघ की राजभाषा, संपर्क भाषा, हिंदुस्तान की तूती, फोर्ट विलियम कॉलेज, सोशल मीडिया, ओटीटी

आलेख :

हिंदी भारत भाग्य याने भारत के भविष्य की अधिनायक भाषा है। वह भारत की सबसे ऊंची आवाज है। वह जन गण मन के व्यक्त होने का साधन है।

हम जानते हैं कि भारत एक बहु भाषा वाला देश है। यहां पर अनेकानेक भाषाएँ एवं बोलियाँ हैं, जो अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। यहां की एक-एक भाषाओं में अनेकों उपभाषाएँ एवं बोलियाँ हैं। इसी में से एक है - हमारी हिंदी।

हिंदी में सत्रह-अठारह प्रमुख बोलियाँ हैं। इनमें से अनेक बोलियों की अपनी-अपनी समृद्ध साहित्य परंपराएँ हैं। जिसमें से अवधी और ब्रज ने तो पूरे मध्यकाल को, राम और कृष्ण को ही अपने वर्चस्व में लिया था। साथ ही मैथिली की भी अपनी एक साहित्य परंपरा रही है।

हम अहिंदी भाषी लोग जिस हिंदी का प्रयोग करते हैं, जिस हिंदी को हम जानते हैं, वह खड़ी बोली हिंदी है। जिसे भारतीय संविधान ने अनुच्छेद 343 के अनुसार 14 सितंबर, 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी है। इसलिए हम 14 सितंबर को हिंदी दिन मनाते हैं।

हिंदी संघ की याने केंद्र सरकार की राजभाषा है। याने वह समग्र भारत की राजभाषा है। वैसे तो भारतीय संविधान ने 22 भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया हुआ है, परंतु विस्तार में और जन गण मन जिस भाषा का सबसे ज्यादा उपयोग करता है वह हिंदी ही है। हिंदी केवल राजभाषा ही नहीं, तो वह हमारी राष्ट्रभाषा भी है।

राष्ट्र की राष्ट्रभाषा वही होती है जिसमें राष्ट्र बोलता है। राष्ट्र की वह संपर्क भाषा होती है। राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग उस भाषा का उपयोग करते हैं। जिसकी समृद्ध लिपि और साहित्य परंपरा होती है। जिस भाषा में अपने देश की संस्कृति, समाज, आचरण पद्धति, जीवन व्यवहार को व्यक्त करने की क्षमता होती है। वह उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा होती है। राष्ट्रभाषा की राष्ट्र विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन सभी जरूरतों को देखते हुए ही शायद राष्ट्र विकास में राष्ट्रभाषा की भूमिका को उजागर करते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा होगा -

"उन्नति पूरी है तबहिं, जब घर उन्नति होय,
निज शरीर उन्नति किए, रहत मूढ़ सब कोय।
निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्यैहैं सोय,
लाख उपाय अनेक यों भले करे किन कोय।"[1]

इन सभी मानदंडों की कसौटी पर भारतीय भाषाओं को तोला जाए तो हमारे सामने उत्तर आता है कि हिंदी ही वह भाषा हो सकती है, जो इन सभी अपेक्षाओं को सशक्तता के साथ न्याय दे सके। भारत में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी ही है। इतना ही नहीं अनेक सर्वेक्षणों ने यह स्पष्ट किया है कि विश्व में अधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषाओं में हिंदी का दूसरा या तीसरा स्थान है। इसीलिए हम बेशक कह सकते हैं कि हिंदी जन गण मन की भाषा है।

हिन्दी 11 राज्यों/द्वीप की मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा और राजभाषा भी है। साथ ही वह महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा, बंगाल, असम, पंजाब आदि राज्यों में और संघ शासित प्रदेशों में

द्वितीय भाषा के रूप में बड़े पैमाने पर व्यवहार में लाई जाती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि- 'भारत हिंदी में बोलता है।'

हिंदी आज ही नहीं तो अपने आरंभ से ही जन गण मन की भाषा रही है। साधारणतः हिंदी का जन्म 1000 ईस्वी के आसपास माना जाता है। जन्म हो कर दो ढाई सौ साल भी नहीं हुए थे कि वह जन गण मन की भाषा हो गई थी। इस संदर्भ में 13 वीं 14 वीं सदी के खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि माने जाने वाले शायर, गायक, संगीतकार अमीर खुसरो ने हिंदी के संदर्भ में कही हुई बात महत्त्वपूर्ण है। वे कहते हैं -

"चूं-मन तूती-ए-हिन्दम अर रास्त पुरसी
जे मन हिन्दवी की पूर्स तो नज़्म गोयम" [2]

अर्थात् 'मैं हिंदुस्तान की तूती हूं। अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो तो हिंदवी में पूछो। मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूंगा।'

हिंदुस्तानी या हिंदवी यह हिंदी के बोलचाल का, संपर्क भाषा का रूप है। जिसमें अरबी-फारसी के अनेक शब्द समाविष्ट हैं। जो जन गण मन की याने जन भाषा है। उसने अनेक भाषाओं से अनेक शब्द लेकर उन स्वार्थ लोलूप लोगों को करारा तमाचा लगाया है। जो अपनी रोटी सेकने के लिए भाषा की सियासत करते हैं, जो हिंदी को केवल हिंदुओं तक सीमित होने की बात करते हैं। इस संदर्भ में स्वतंत्रता पूर्व 29 दिसंबर, 1934 ईस्वी के दिन 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास' के चतुर्थ उपाधि वितरण उत्सव के अवसर पर, दिए गए दीक्षांत भाषण में 'राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी समस्याएँ ' इस विषय पर बोलते समय प्रेमचंद ने कहा था,

"मैं पूछता हूं, आप हिंदी को क्यों गरदनजदनी समझते हैं? क्या आपको मालूम है, और नहीं है, तो होना चाहिए कि हिंदी का सबसे पहला शायर, जिसने हिंदी का साहित्यिक बीज बोया (वैसे तो व्यावहारिक बीज सदियों पहले पड़ चुका था) वह अमीर खुसरो था? क्या आपको मालूम है, कम-से-कम पांच सौ मुसलमान शायरों ने हिंदी को अपनी कविता से धनी बनाया है, जिनमें कई तो चोटी के शायर है? क्या आपको मालूम है, अकबर और जहांगीर और औरंगजेब तक हिंदी कविता का शौक रखते थे और औरंगजेब ने ही आमों के नाम 'रसना विलास' और 'सुधारस' रखे थे? क्या आपको मालूम है... क्या आपको मालूम है, हिंदी में हजारों शब्द, हजारों क्रियाएँ

अरबी और फारसी से आई हैं और ससुराल में आकर घर की देवी हो गई है? अगर यह मालूम होने पर भी आप हिंदी को उर्दू से अलग समझते हैं तो आप देश के साथ और अपने साथ बेइंसाफी करते हैं। 'उर्दू' शब्द कब और कहां उत्पन्न हुआ इसकी कोई तारीखी सनद नहीं मिलती... मजा यह है कि 'हिंदी' मुसलमानों का दिया हुआ नाम है और अभी 50 साल पहले तक जिसे आज उर्दू कहा जा रहा है, उसे मुसलमान भी हिंदी कहते थे।'[3]

उस समय प्रेमचंद जी ने कही हुई बात से यह स्पष्ट होता है कि, हिंदी उस समय भी केवल हिंदुओं की भाषा नहीं थी वह उस समय भी हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों आदि की भी भाषा थी। जिसका प्रयोग सभी लोग कम-अधिक मात्रा में करते थे। जो आज का भी वास्तव है।

आज भी भारत में अनेक धर्म, संप्रदाय, जाति, प्रदेश के लोग कम-अधिक मात्रा में हिंदी का प्रयोग करते हैं। हिंदी हमेशा से राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकात्मता और राष्ट्रीय आंदोलन की भाषा रही है। मध्यकाल में भी हिंदी ने हम हिंदुस्तानियों का हौसला अफजाई किया है। कबीर ने, तुलसी ने, सूर ने अपनी कविताओं के माध्यम से पराधीन वृत्ति को पनपने से रोककर भक्ति की डोर से सबको बांधे रखने का काम किया है। यही कार्य आगे चलकर अंग्रेजों के विरुद्ध चले आंदोलन में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकात्मता का अलख जगाने का काम मैथिलीशरण गुप्त, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि ने किया है। माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' से तो हम सब वाकिफ हैं ही। जिसमें वे कहते हैं -

"मुझे तोड़ लेना वनमाली। उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जावे वीर अनेक।"[4]

स्वतंत्रता के पश्चात भी हिंदी ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई है। यहां के शासन तंत्र को भी वह हमेशा टोकती और सुधारती रही है। राजनेताओं की पोल खोलती रही है। प्रगतिशील कवि नागार्जुन तत्कालीन प्रधानमंत्री, सबसे ताकतवर राजनेता इंदिरा गांधी जी को चेतवानी देते हुए लिखते हैं -

"क्या हुआ आपको ?

क्या हुआ आपको ?
सत्ता की मस्ती में भूल गई बाप को !
इंदुजी इंदुजी क्या हुआ आपको ?"[5]

इसी प्रवृत्ति को आगे बढ़ाते हुए ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार भी जन गण मन की भाषा में कहते हैं -

"मत कहो, आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।
इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है,
हर किसी का पांव घुटनों तक सना है।"[6]

बिगड़े हुए नेताओं को आईना दिखाने का काम हिंदी आज भी कर रही है। हिंदी साहित्यकारों, हिंदी भाषा प्रेमियों, हिंदी सेवियों ने हिंदी को जन मन तक पहुंचाने का काम किया है और आज भी कर रहे हैं।

हम जानते हैं कि देवकीनंदन खत्री जी के 'चंद्रकांता' उपन्यास को पढ़ने के लिए अहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी थी। बच्चन जी की 'मधुशाला' भगवतीचरण वर्मा जी का उपन्यास 'चित्रलेखा' और प्रेमचंद जी के 'गोदान' की लाखों प्रतियाँ बिक चुकी हैं और आज भी बेची जा रही हैं।

हिंदी केवल साहित्य की ही भाषा नहीं है, तो वह यात्रा की भी भाषा है। हम हिंदी के माध्यम से पूरे भारतवर्ष की यात्रा आसानी से कर सकते हैं। हमें कहीं पर भी कोई दिक्कत नहीं आती। हम दक्षिण भारत का ही उदाहरण लें तो दक्षिण भारत में जितने भी तीर्थ क्षेत्र हैं, पर्यटन स्थल हैं। वहां के व्यावसायिक और स्थानीय लोग टूटी-फूटी हिंदी में ही क्यों न हो आप से बात करते हैं। मध्य, पूर्व भारत की तो कोई बात ही नहीं और बचा हुआ पूरा भारत तो जैसे मातृभाषी हिंदी ही है। कहने का तात्पर्य है कि हिंदी पूरे भारत के जन गण मन की भाषा है। इस बारे में एक संदर्भ का हम उल्लेख जरूरी समझते हैं। सन् 1800 में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना कोलकाता में हुई थी और उसके प्रिंसिपल थे गिलक्रिस्ट। इन्हीं के एक शिष्य थे मैटकॉफ,

जिन्होंने गिलक्रिस्ट से हिंदी सीखी थी। मैटकॉफ गिलक्रिस्ट को लिखे एक पत्र में लिखते हैं, "भारत के जिस भाग में मुझे काम करना पडा है, कलकत्ते से लेकर लाहोर तक, कुमॉयु के पहाड़ों से लेकर नर्मदा तक, अफगानों, मराठों, राजपूतों, जाटों, सिखों और उन प्रदेशों के सभी कबीले में जहां मैंने यात्रा की है, मैंने उस भाषा का व्यवहार देखा है जिसकी शिक्षा आपने मुझे दी थी। मैं कन्याकुमारी से कश्मीर तक इस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जायेंगे जो हिन्दुस्तानी बोल लेते हों।"[7]

हिंदी रोजी-रोटी की, रोजगार की भाषा होने के कारण भी जन गण मन के हृदय के निकटस्थ है। वही भाषा विकास कर सकती है जो आपको रोजी-रोटी, रोजगार दें। हिंदी ने हमेशा से रोजगार दिए हैं और आज भी वह सभी भारतीय भाषाओं की तुलना में रोजगार की भाषा बनी हुई है। दिहाड़ी मजदूर से लेकर कारपोरेट क्षेत्रों तक हिंदी का आज प्रयोग होता दिखाई देता है। कारपोरेट क्षेत्र में भी 24×7 के हिसाब से अंग्रेजी का प्रयोग नहीं होता। वहां काम करने वाले कर्मचारी, ऑफिसर भी दिन में अधिकांश समय हिंदी में ही बात करते हैं।

हिंदी के लिए आज बैंकों में, डाक विभाग, रेल विभाग, शेयर मार्केट, दूतावास आदि जगहों पर अच्छे ओहदे की नौकरियाँ हैं। संघ लोक सेवा आयोग, स्टाफ सिलेक्शन, बीमा निगम, इनकम टैक्स, केवीएस, भारतीय सेना, यूजीसी आदि की होने वाली परीक्षाओं के लिए भी हिंदी का पर्याय उपलब्ध है।

आज हिंदी के लिए सबसे बड़ा रोजगार जनसंचार माध्यमों और मीडिया में उपलब्ध है। भारत में सबसे ज्यादा समाचार पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी में निकलती हैं। सबसे ज्यादा टीवी, रेडियो चैनल्स हिंदी में बजते हैं। सबसे ज्यादा विज्ञापन हिंदी में बनते हैं और बिकते हैं। सबसे ज्यादा गीत-संगीत हिंदी में बजता है। सबसे ज्यादा फिल्में हिंदी में बनती और बिकती हैं। अन्य भाषाओं की फिल्मों का डबिंग भी हिंदी में जादा होता है। इतना ही नहीं आज सोशल मीडिया पर, ओटीटी पर सबसे ज्यादा वेब सीरीज, रील हिंदी में बन रही हैं, बिक रही हैं। ब्लॉग लेखन, ई पत्र-पत्रिकाओं के लिए भी भारत में सबसे ज्यादा हिंदी का ही प्रयोग हो रहा है। इंटरनेट पर सर्फिंग हिंदी में अधिक हो रही है। हिंदी में अनुवाद भी एक सशक्त रोजी-रोटी का जरिया बन गया है। फिर वह साहित्य का अनुवाद हो या अन्य तकनीकी, वैज्ञानिक, कार्यालयीन कामकाज अनुवाद हो।

इन सभी बातों की चर्चा के बाद हम निसंकोच कह सकते हैं कि, हिंदी आज जन गण मन के अभिव्यक्ति की एक सशक्त भाषा है। जिसमें हमारी भारतीय संस्कृति बसी है, जिसमें हमारी धार्मिक आस्थाएँ वास करती हैं। वह हमारे सपनों की भाषा है। वह हमारे इतिहास-भूगोल का वहन करती है। वह हमारी वैश्विक पहचान है। वह हमारा स्वाभिमान है, गौरव है। वह हमें विविधता में एकता का मंत्र देते हुए कहती है-

"सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।"[8]

संदर्भ सूची

1. हेमंत शर्मा, (1989) भारतेंदु समग्र, हिंदी प्रचार संस्थान, वाराणसी, पृ, 228
2. गोपीचंद नारंग, (2002) अमीर खुसरों का हिन्दवी काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 04
3. प्रेमचंद, (1954) कुछ विचार, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ. 109,110
4. माखनलाल चतुर्वेदी, (1956) युगचरण, भारती भंडार लीडर प्रेस, प्रयाग, पृ. 31
5. नागार्जुन, (1993) खिचड़ी विप्लव देखा हमने, यात्री प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 10
6. दुष्यंत कुमार, (2021) साये में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि.,नई दिल्ली, , पृ. 27
7. रामविलास शर्मा, (2009) भारत की भाषा समस्या, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, पृ. 323
8. इकबाल - http://kavitakosh.org/kk/सारे_जहाँ_से_अच्छा_हिन्दोस्तां_हमारा_/_इक़बाल

डॉ. गोरख प्रभाकर काकडे
हिंदी विभाग, सरस्वती भुवन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर
मो. नं.7588934474 ईमेल - dr.gorakhkakade@gmail.com